मेरा नाम आकांक्षा यादव है। मैं एक खिलाड़ी हूँ।
एक ऐसे खेल की जिसके बारे में हमारे देश में कम लोगों ने सुना होगा।
और उससे भी कम लोगों ने एक लड़की को यह खेल खेलते देखा होगा।
यह है मेरी और मेरी बेसबॉल की कहानी।

मैं सात साल की थी जब मैंने पहली बार स्टेडियम में लोगों को एक गेम खेलते देखा। यह गेम दिखता तो क्रिकेट जैसा था मगर था अलग।

मैंने इसके बारे में न सुना था न ही कभी देखा था। बेसबॉल – उस वक्त मेरे लिए एक नया शब्द था । मेरे मन में इसके बारे में जानने की उत्सुकता हुई ।

मैं रोज सुबह स्टेडियम जाकर यह गेम खेल रहे खिलाड़ियों को देखने लगी और समझने की कोशिश करने लगी।

एक दिन मैंने हिम्मत करके बेसबॉल कोच से बात की।

कोच ने तो मना कर दिया लेकिन बेसबॉल की तरफ मेरी रुचि देखते हुए मेरे माता–पिता मान गए और मुझे प्रोत्साहित भी किया।

और इस तरह से मैंने छोटी सी उम्र में खेलना शुरू कर दिया।
मैंने राष्ट्रीय स्तर तक इस खेल में हिस्सा लिया और 11 नेशनल अवार्ड जीते।
2
1
3

मैंने स्कूल में बेसबॉल शुरू करने की बात कही और फिर अपने स्कूल में लड़कियों की एक टीम बनाई।

हमने खूब मेहनत की और फिर ऐसा दिन आया जब हमारी स्कूल की टीम राष्ट्रीय स्तर पर खेलने गयी।

यह हमारे लिए बहुत गर्व भरा दिन था।

छत्तरपुर में सिर्फ स्कूल तक ही हम बेसबॉल खेल पाते हैं क्यूंकि यहाँ कोई एसोसिएशन या यूनिवर्सिटी नहीं है जहाँ हम शामिल हों पाएं और आगे खेल सके।

मगर लड़कियां कैसे ऐसा गेम खेल सकती हैं?
इसमें तो शारीरिक बल की जरूरत है
क्या पी.टी.उषा और मैरी कॉम लड़कियां नहीं हैं? आओ हमें खेलते देखो, आपको अपने सवालों के जवाब मिल जाएंगे।

किशोरों के उच्च समतावादी लिंग दृष्टिकोण पर स्कूली शिक्षा का प्रभाव

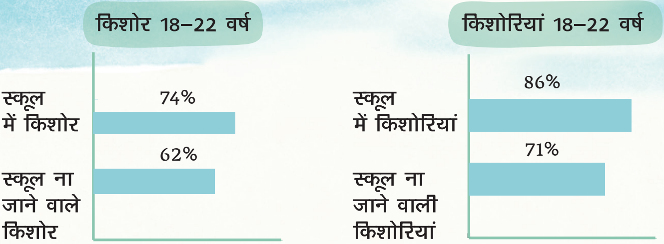

सोर्सः उत्तर प्रदेश और बिहार में उदया का सर्वेक्षण (2015–16 और 2018–19)

हमारे समाज में जेंडर असमानता अभी भी काफी हद तक कायम है। लड़को और लड़कियों से अलग उम्मीदें होती हैं।

कोई भी गेम में यूनिफार्म कई प्रकार की होती हैं। बेसबॉल के लिए तो बिलकुल ही अलग कपड़े होते हैं। लोग उस पर भी टोकते हैं।

उदया सर्वे के अनुसार,15–19 साल की अविवाहित लड़कियां जिन्होंने वर्ष 2015–16 में स्पोर्ट्स में भाग लिया था, वर्ष 2018–19 में ऐसी लड़कियों के पास अपने फैसले लेने की और घूमने की आजादी दूसरी लड़कियों से ज्यादा है। इन लड़कियों में आत्मनिर्भरता और जेंडर समानता भी ज्यादा पाया गया है।

उदया डाटा के अनुसार जो किशोर किशोरियां स्कूल में दाखिल हैं, उनके जेंडर समानता के प्रति रुझान भी ज्यादा है।

एक और अहम् बात यह भी है कि जो नौजवान लड़कियां जेंडर समानता में विश्वास रखती हैं, वो शादी के बाद कम शारीरिक हिंसा का सामना करती हैं। ये लड़कियां अपने शरीर से जुड़े फैसले भी ज्यादातर खुद ले सकती हैं – जैसे की कंट्रासेप्शन का इस्तेमाल करने का फैसला।

खेल में और जिन्दगी में खुद के साथ कंफर्टेबल होना बहुत जरूरी है।

साभारः यह ज़ीन बहनबॉक्स और चित्रकूट कलेक्टिव की पेशकश है। डाटा उदया सर्वे से लिया गया है। यह प्रोजेक्ट पॉपुलेशन कॉउंसिल के उदया ग्रांट से संभव हुआ है।

BEHANBOX chitrakoot collective UDAYA TOWARDS ADULTHOOD